RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015–17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 53 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 17 मार्च, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 53, 14-17 मार्च 2019 तदनुसार 4 चैत्र, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

समान उद्देश्य

लेo–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः।।
सध्रीचीनान्वः संमनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्त्संवननेन सर्वान्।
देवाइवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सौमनसो वो अस्तु।।

–अथर्व० ३।३०।६,७

शब्दार्थ–वः = तुम्हारा **प्रपा** = प्याऊ, पानी पीने का स्थान **समानी** = एक–साथ हो और तुम्हारा **अन्नभागः** = भोजन–सेवन भी **सह** = साथ हो। **वः** = तुमको **समाने** = एक, एक–जैसे **योक्त्रे** = जुए में **सह+युनज्मि** = एक–साथ जोड़ता हूँ। **सम्यञ्चः** = एक गतिवाले होकर **अग्निम्** = ज्ञान को, भगवान् को **सपर्यत** = सेवन करो, पूजो, **इव** = जैसे **अराः** = अरे **अभितः** = सब ओर से **नाभिम्** = रथ की नाभि के धुरे का सेवन करते हैं। **संमनसः** = समान मन वाले और **सध्रीचीनान्** = समान चाल वाले **वः सर्वान्** = तुम सबको **सं+वननेन** = एक–से संभजन द्वारा **एकश्नुष्टीन्** = समान खान–पानवाला **कृणोमि** = करता हूँ, बनाता हूँ। **देवाः+इव** = इन्द्रियों की भाँति **अमृतम्** = जीवन को तुम **रक्षमाणाः** = बचाते रहो। **सायंप्रातः** = साँझ–सवेरे **वः** = तुम्हारी **सौमनसः+अस्तु** = सुमनस्कता हो, भलाई हो।

व्याख्या–आजकल मनुष्यों में खानपान के कारण विषम भेदभाव बढ़ रहा है। यह सर्वथा वेद–विरुद्ध है। वेद तो घोषणा करता है–**'समानी प्रपा सह वो अन्नभागः'** = तुम्हारा प्याऊ और भोजन–स्थान एक हो। खान–पान को समान करने का साधन है–**'समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि'** = तुम सबको एक–साथ एक जुए में जोड़ता हूँ। भगवान् का आदेश है कि तुम्हें मैंने एक लक्ष्य बताया है। वेद का आदेश है, जिस प्रकार रथ–चक्र में अरे जुड़े रहते हैं, अरों का साध्य रथचक्र की नाभि है। ऐसे ही सब मनुष्यों के जीवन का लक्ष्य एक होना चाहिए। वेद ने लक्ष्य का भी सङ्केत कर दिया है–**'सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यत'** = समानगति वाले होकर **अग्नि** = ब्रह्माग्नि की, ज्ञानाग्नि की पूजा करो।

पहले मन्त्र में खानपान की एकता सम्पादन करके मानो एक लक्ष्य की सिद्धि का निर्देश किया है, दूसरे मन्त्र में एक आचारवालों के खान–पान समान=एक करने का विधान किया है। आवश्यक नहीं कि जिनका खान–पान समान हो उनका मन या ज्ञान भी समान हो, अतः वेद कहना चाहता है कि केवल खान–पान की समानता से ही समता स्थापित नहीं हो जाती। समता के लिए विचार–आचार की समानता उत्पन्न करो, फिर खान–पान की समानता आसान हो जाएगी। जिस प्रकार सारी इन्द्रियाँ मिलकर जीवन तथा अमृतात्मा की रक्षा करती हैं, उसी प्रकार जीवन का एक लक्ष्य बनाने से सदा कल्याण प्राप्त होता रहेगा।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च।
मां पुनीहि विश्वतः।।

–यजु० १६.४३

भावार्थ–हे सकल सृष्टिकर्त्ता सकल सुखप्रदाता परमात्मन्! आप कृपा करके हमें अपना यथार्थ ज्ञान प्रदान करें तथा शुद्धाचरणवाला बनाकर ऐश्वर्य भी देवें, क्योंकि शुद्ध आचरण और आपके ज्ञान के बिना सब ऐश्वर्य पुरुष को नरक में ले जाता है। इसलिए हमारी प्रार्थना है कि, हमें शुद्धाचरणवाला और ब्रह्मज्ञानी बनाकर, उत्तम ऐश्वर्य प्रदान करते हुए, पवित्र बनाएँ, जिससे हम, लोक और परलोक में सुखी हों।

अग्न आयूꣳषि पवस आ सुवोर्जमिषञ्च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।।

–यजु० १६.३८

भावार्थ–हे अन्तर्यामी कृपासिन्धो भगवन्! हम पर आप कृपा करें, हमारा जीवन पवित्र हो, आपके यथार्थ ज्ञान और आपकी प्रेम भक्ति के रंग से रंगा हुआ हो। हमारे शरीर नीरोग, मन उज्ज्वल और आत्मा उन्नत हों। हमारे आर्य भ्राता, वेदों के विद्वान्, पवित्र जीवन वाले, धार्मिक, आपके अनन्य भक्त श्रद्धा हृदय को भी पवित्र करें, जिससे वे लोग भी, किसी की हानि न करते हुए कल्याण के भागी बन जावें।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रꣳहवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रꣳहुवेम।।

–यजु० ३४.३४

भावार्थ–हे ज्ञानस्वरूप ज्ञानप्रद परमात्मन्! हे सकल ऐश्वर्य के स्वामी ऐश्वर्य के दाता प्रभो! हे परम प्यारे सूर्य, चन्द्र आदि सब जगतों के रचयिता अपने भक्तों और ब्रह्माण्ड के पालन करने वाले जगदीश! सब मनुष्यों के आप ही सेवनीय हो। आप ही सब भक्तों को शुभ कर्मों में लगाने वाले और उनके रोग शोक आदि कष्टों के दूर करने वाले और अन्तर्यामी हो। हम आपकी ही स्तुति प्रार्थना उपासना करते हैं अन्य की नहीं।

तज्जपस्तदर्थभावनम्

ले.-महात्मा चैतन्यमुनि, सुन्दरनगर, जिला मण्डी, हि०प्र०-174001

क्रतु का अर्थ है कर्म करने वाला अर्थात् व्यक्ति को सदा कर्मशील बने रहना चाहिए। वेद हमें यही प्रेरणा देता है-ओ३म् कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः। एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। (यजु०40-2) हे मनुष्य! (इह) इस लोक में (कर्माणि कुर्वन् एव) कर्मों को करते हुए ही तूने जीना है, (शतं समाः जिजीविषेत्) तू सौ वर्ष जीने की कामना कर, (एवं त्वयि इतः अन्यथा अस्ति) कर्म करते हुए सौ वर्ष जीना ही तेरे जीवन का एकमात्र नियम है, और कोई अन्य नियम नहीं मगर (न कर्म निप्यते नरे) इन कर्मों में उलझ नहीं जाना बल्कि विरत होकर सदा कर्मशील बनें रहना। जीव कर्म करने में तो स्वतन्त्र है मगर फल भोगने में वह परतन्त्र है क्योंकि कर्मों का फल तो न्यायकारी परमात्मा ने देना है। इसलिए इस कर्म स्वतन्त्रता का लाभ उठाकर सदा कर्मशील बनें रहना चाहिए और ये कर्म निष्कामभाव से करने चाहिए। यजुर्वेद में ही अन्यत्र जीव को क्रतु कहा है-ओ३म् क्रतो स्मर (यजु०40-15)। श्रीकृष्ण जी भी कहते हैं-अहं क्रतुरहं यज्ञः (गीता9-16)। गीता में अन्यत्र यह भी कहा गया है कि बिना कर्म के तो व्यक्ति एक क्षण के लिए भी नहीं रह सकता है। अतः कर्म तो करने ही हैं मगर यदि व्यक्ति के द्वारा पुण्यकर्म किए जाएं तो इससे वह निष्काम-कर्मी और सुक्रतु बन जाता है। वेद में सुक्रतु बनने की प्रेरणा दी गई है और साथ ही प्रक्रिया बताई गई है-ओ३म् त्रिणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वैरयद्रयिम्। मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः।। (सा०1015) मन्त्र में सुक्रतु बनने के लिए मुख्यतः पहली बात कही गई कि-त्रिणि त्रितस्य धारया, जो व्यक्ति जीवन में तीन बातों को धारण कर लेता है, वह सुक्रतु बन जाता है। ऐसी बहुत सी तीन बातें हैं मगर यहां हम साधना के अन्तर्गत तीन प्रकार के जप की चर्चा करेंगे।

अष्टांग-योग में धारणा का विशेष महत्व है और ब्रह्मर्षि पतंजलि जी इस सम्बन्ध में कहते हैं-देश-बन्धश्चितस्य धारणा। (यो०द०3-1) महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस सूत्र की विवेचना करते हुए लिखते हैं-'(देशबन्ध०) जब उपासनायोग के पूर्वोक्त पांचों अंग सिद्ध हो जाते हैं, तब उसका छठा अंग धारणा भी यथावत् प्राप्त होती है (धारणा) उसको कहते हैं कि मन को चंचलता से छुड़ाके नाभि, हृदय, मस्तक, नासिका और जीभ के अग्रभाग आदि देशों में स्थिर करके ओंकार का जप और उसका अर्थ जो परमेश्वर है। उसका विचार करना।' (ऋ०भू०उपासना०) अन्यत्र इस सम्बन्ध में वे लिखते हैं (दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह) 'नाभि, हृदय, मूर्धाज्योति अर्थात् नेत्र, नासिकाग्र, जिव्हाग्र इत्यादि देशों के बीच में चित्त को योगी धारण करे तथा बाह्य विषय जैसा कि ओंकार वा गायत्री मन्त्र इनमें चित्त लगावे। क्योंकि 'तज्जपस्तदर्थभावना' (यो०1-28) यह सूत्र है योग का। इसका योगी जप अर्थात् चित्त से पुनःपुनः आवृत्ति करे और इसका अर्थ जो ईश्वर उसको हृदय में विचारे। 'तस्य वाचकः प्रणवः। (यो०1-27) ओंकार का वाच्य ईश्वर है और उसका वाचक ओंकार है। बाह्य विषय से इनको ही लेना और किसी को नहीं। क्योंकि अन्य प्रमाण कहीं नहीं।' महर्षि व्यासजी ने भी ओ३म् आदि पवित्रकारक वचनों तथा मन्त्रों का जप करने हेतु कहा है-प्रणवादि पवित्राणां जपः। (यो०भा०2-1)। उपरोक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो गई कि धारणा को परिपक्व करने के लिए साधक को शरीर के किसी अंग पर चित्त को ठहराकर ईश्वर के निज नाम ओ३म् या गायत्री आदि मन्त्रों का जप करना चाहिए।

गायत्री के सम्बन्ध में महर्षिजी लिखते हैं-'गायत्री-महामन्त्र के अर्थ पर विचार करना चाहिए। इस मन्त्र द्वारा सारे विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है, उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलिनता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है। दूसरे किसी मत में प्रार्थना के मन्त्रों की ऐसी गहराई और सच्चाई नहीं है।' (पूना प्रवचन)। ऋ०भा०भू० के 'ग्रन्थ प्रमाण्या-प्रामाण्य विषय' में गयादि तीर्थों की कथाओं का रहस्य खोलते हुए महर्षि जी शतपथ का उद्धरण देते हुए लिखते हैं-'प्राणो वै बलं, तत्प्राणे प्रतिष्ठितं, तस्मादाहुर्बलं सत्यादोजीयः। इत्येवम्वैषा गयध्यायत्मं प्रतिष्ठित। सा हैषा गयास्तत्रे। प्राणा वै गयास्तत्प्राणां स्तत्रे गायत्रीनाम्।' इन वचनों का अभिप्राय है कि अत्यन्त श्रद्धा से गया-संज्ञक प्राण आदि में परमेश्वर की उपासना करने से जीव की मुक्ति हो जाती है। प्राण में बल और सत्य प्रतिष्ठित हैं क्योंकि परमेश्वर प्राण का भी प्राण है, और उसका प्रतिपादन करने वाला गायत्री मन्त्र है, जिसको गया कहते हैं। इसलिए कि उसका अर्थ जानकर श्रद्धा सहित परमेश्वर की भक्ति करने से जीव सब दुःखों से छूटकर मुक्ति को प्राप्त हो जाता है तथा प्राण का भी नाम 'गया' है, उसको प्राणायाम की रीति से रोककर परमेश्वर की भक्ति प्रताप से पितर अर्थात् ज्ञानी लोग सब दुःखों से छूटकर मुक्ति को प्राप्त हो जाता है क्योंकि परमेश्वर प्राणों की रक्षा करने वाला है। इसलिए ईश्वर का नाम गायत्री और गायत्री का नाम ईश्वर है।' सत्यार्थ-प्रकाश के तृतीय समुल्लास में महाराज लिखते हैं-'जंगल में अर्थात् एकान्त देश में जा, सावधान होके, जल के समीप स्थिर होकर नित्यकर्म को करता हुआ गायत्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण, अर्थज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल-चलन को करे परन्तु यह सब मन से करना उत्तम है...' ओ३म् के सम्बन्ध में महर्षि जी लिखते हैं-'(तस्य वा०) जो ईश्वर का ओंकार नाम है, सो पिता-पुत्र के सम्बन्ध के समान है। और यह नाम ईश्वर को छोड़के दूसरे अर्थ का (अग्नि आदि की भांति) वाची नहीं हो सकता। ईश्वर के जितने नाम है, उनमें से ओंकार सबसे उत्तम नाम है।' (ऋ० भू० उपासना) इस सम्बन्ध में सत्यार्थप्रकाश (प्रथम समुल्लास) में वे लिखते हैं-'(ओ३म्) यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है। क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक (ओ३म्) समुदाय बना है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं। जैसे-अकार से विराट् अग्नि और विश्वादि। उकार से-हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि। मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है।' 'सब वेदादि शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान और निज नाम (ओ३म्) को कहा है, अन्य सब गौणिक नाम है।' माण्डूक्योपनिषद् में ओंकार का महत्व इस प्रकार बताया गया है-ओमित्येतदक्षरं सर्व तस्योपव्याख्यानं भूतं भविष्यदिति सर्वंओंकार एव।। अर्थात् ओंकार ही परमात्मा का व्याख्यान होने से परमात्मा का मुख्य नाम है। प्रश्नोपनिषद् के अनुसार-यथापादोदरस्त्वचा विनिर्मुच्यत एवं ह वै स पाप्मना विनिर्मुक्तः स सामभिरून्नीयते। अर्थात् ओंकार का जप करने से उपासक अविद्यादि क्लेशों से वैसे ही मुक्त हो जाता है, जैसे सर्प अपनी त्वचा (कैंचुली) से मुक्त हो जाता है।

जप किस प्रकार से करें इसके लिए निर्देश है-तज्जपस्तदर्थभावनम्। (यो०1-28) महर्षि इस सूत्र की विवेचना करते हुए लिखते हैं-'(तज्जप०) इसी नाम का जप अर्थात् स्मरण और उसी का अर्थ-विचार सदा करना चाहिए कि जिससे उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञान को यथावत् प्राप्त होकर स्थिर हो, जिससे उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश और परमेश्वर की प्रेम-भक्ति सदा बढ़ती जाए।' (ऋ०भू० उपासना०)। मनु महाराज ने जप के भेद बताते हुए कहा है-विधियज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः। उपांशुः स्याच्छतगुणः साहस्त्रो मानसः स्मृतः।। (मनु०2-85) अर्थात् अग्निहोत्र करने से जप करना दस गुणा अधिक फल देता है। परन्तु बोलकर जप करने से उपांशुजप (जो दूसरे को सुनाई न दे और होंठ हिलते रहें) सौ गुणा अधिक फल देता है और इन दोनों जापों से मानस जप करना हजार गुणा श्रेष्ठ होता है। इससे स्पष्ट होता है कि ओ३मादि का जप तीन प्रकार से किया जा सकता है-प्रथम बोलकर, दूसरा मात्र होंठ हिलाकर और तीसरा मानसिक जप। मगर प्रक्रिया वही अर्थ-विचार पूर्वक ही रहनी चाहिए। अन्तर केवल इतना भर रहेगा कि पहले तो शब्द बोलकर अर्थ-विचार किया जाऐगा, फिर होंठ हिलाकर और फिर यही मानसिक

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

अमर शहीद–पं. लेखराम जी

धर्म के लिए बलिदान जाति के लिए वे काम करते हैं, जो किसी भवन के निर्माण में सीमेंट का काम करते हैं। गीता में श्रीकृष्ण जी महाराज ने भी कहा है- स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह: अर्थात् अपने धर्म के लिए मर मिटना भी कल्याणकारी होता है, दूसरों का धर्म भय देने वाला होता है। गीता की इन्हीं पंक्तियों का अनुसरण करने वाले हमारे नायक धर्मवीर पं. लेखराम जी आर्य मुसाफिर थे। पं. लेखराम जी आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के पक्के अनुयायी थे। अपने धर्म के प्रति उनके अन्दर अपार निष्ठा थी।

पं. लेखराम जी का जन्म जेहलम जिले के एक ग्राम सैदपुर में हुआ था। बाल्याकाल में पं. लेखराम का अध्ययन फारसी एवं उर्दू के माध्यम से हुआ। सामान्य शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात वे सत्रह वर्ष की आयु में पुलिस में भर्ती हो गए। इस विभाग में उन्नति करते-करते वे सार्जेंट के पद तक पहुंच गए। पुलिस की सेवा करते-करते पं. लेखराम जी को आर्य समाज का प्रकाश मिला। इससे वे इतने प्रभावित हुए कि सरकारी सेवा को लात मार कर आर्य समाज के प्रचारक बन गए। उर्दू और फारसी का ज्ञान तो था ही परन्तु इन्होंने हिन्दी और संस्कृत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अभ्यास शुरू कर दिया। तत्पश्चात वैदिक ग्रन्थों के गम्भीर स्वाध्याय ने आपकी योग्यता को चार चांद लगाए। पं. लेखराम ने कुरानशरीफ का अध्ययन तो तन्मयता से किया था किन्तु बाईबल तथा अन्य मतावलम्बी सिद्धान्त ग्रन्थों का भी तुलनात्मक अध्ययन किया। उस अध्ययन के निष्कर्ष को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए उसे लेखबद्ध किया और उन सब लेखों और पुस्तकों का संग्रह करके पुस्तकाकार में छपवा कर उस पुस्तक का नाम कुलियात आर्य मुसाफिर रखा जो उस अमर शहीद की योग्यता तथा अनुभव का प्रतीक है।

अमर शहीद पं. लेखराम जी एक अत्यन्त प्रतिभाशाली वक्ता एवं अन्वेषक थे। प्रत्येक घटना तथा घटना की गहराई तक पहुंचना उनका एक विशेष गुण था। इस अन्वेषण के कार्य के लिए उन्हें विभिन्न स्थानों पर अनेकों बार आना जाना पड़ा। प्रचार तथा शास्त्रार्थ के उद्देश्य से वे निरन्तर अपने बलिदान तक इधर-उधर भ्रमण करते रहे। इसी कारण पं. लेखराम जी का नाम आर्य पथिक अथवा आर्य मुसाफिर पड़ गया। इस्लाम से सम्बन्धित सब सम्प्रदायों से इनके शास्त्रार्थ हुआ करते थे किन्तु मिर्जाई मतावलम्बियों से इनकी अनेक टक्करें होती रहीं। मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी विशेष रूप से इनसे चिढ़ते थे क्योंकि पं. लेखराम ने अहमदिया सम्प्रदाय और उसके स्वयंभू पैगम्बर को अपनी आलोचना का लक्ष्य बनाया था। इस सम्प्रदाय की मान्यताओं के खण्ड़न में उन्होंने अनेक ग्रन्थ निकाले। मिर्जा साहिब ने इस अमर शहीद को आतंकित करने के लिए कई अवैध और घृणित साधनों को अपनाया किन्तु यह साहसी वीर एक बार लगभग एक मास तक मिर्जा साहिब के गढ़ कादियां में दहाड़ता रहा। मिर्जा साहिब के सारे इलहाम और भविष्यवाणियों की पोले खुली तो वे ऐसे दयानन्द भक्त, धर्मप्रेमी को सहन न कर सके। एक कायर और कृतघ्न व्यक्ति जो शुद्ध होने के बहाने से उनके पास लाहौर भेज दिया, जिसने अवसर पाते ही इस अमर शहीद को अंगड़ाई लेते समय उनकी छाती में छुरा घोंप दिया। महर्षि दयानन्द के पश्चात यह आर्य समाज का दूसरा बलिदान था।

पं. लेखराम जी महर्षि दयानन्द के अनुयायी थे। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने के लिए उन्होंने रात-दिन एक किया। अपने जीवन की, अपने परिवार की परवाह न करते हुए जहां पर भी, जिस समय भी उनकी आवश्यकता महसूस की गई तुरन्त सभी कार्यों को छोड़कर वहां पहुंचना उनकी धर्म के लिए अपार निष्ठा को दिखाता है। जिस जाति में, जिस धर्म में ऐसे धर्मनिष्ठ और वीर पुरूष होते हैं वही धर्म व जाति उन्नति करता है। आर्य समाज का यह सौभाग्य था कि उसे पं. लेखराम जैसा धुन का धनी व्यक्ति मिला। महर्षि दयानन्द जी ने जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी, उन्हें पूरा करने के लिए पं. लेखराम जी ने अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। पुलिस विभाग की नौकरी को छोड़ कर अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में उन्होंने उपदेश दिया कि आर्य समाज में तहरीर और तकरीर का काम बन्द नहीं होना चाहिए। पं. लेखराम जी एक निर्भीक प्रचारक थे। उन्हें बार-बार चेतावनी दी गई कि जिस विचारधारा का वह प्रचार कर रहा है उसे बन्द करें नहीं तो इसकी बहुत अधिक सजा मिलेगी। पं. लेखराम पर इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। वह अपना काम करते गए और एक दिन वह भी आया जब उनकी हत्या कर दी गई। अपने बलिदान से पहले उन्होंने एक वसीयत की थी कि आर्य समाज से साहित्य निर्माण का कार्य बन्द नहीं होना चाहिए और इसमें सन्देह नहीं कि आर्य समाज में साहित्य का निर्माण तो होता रहा परन्तु उस साहित्य का जो प्रचार-प्रसार होना चाहिए था, उस कार्य में आज हम पीछे रह गए हैं। साहित्य तभी लाभकारी हो सकता है जब उसे कोई पढ़ने वाला होगा। इसलिए महत्वपूर्ण कार्य प्रचार का है। आज आवश्यकता है तो उस साहित्य, वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार की। अगर आज हम आर्य समाज का प्रचार करना चाहते हैं तो हमें अपने सामने एक लक्ष्य प्रस्तुत करना होगा। बिना लक्ष्य और उद्देश्य के कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता। 6 मार्च को हमने पं. लेखराम जी को याद किया, उन्होंने जो कुछ किया था उसे हम सभी जानते हैं। परन्तु क्या इतने से ही हमारा कर्त्तव्य पूरा हो जाएगा? शहीदों का जीवन हमें क्या शिक्षा देता है? इस पर हमें विचार करना है। शहीदों का जीवन हमें एक ही शिक्षा देता है कि जब व्यक्ति अपने सामने एक लक्ष्य रख लेता है तो उसका यह भी कर्त्तव्य हो जाता है कि उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील और कर्मशील रहे। धर्मवीर पं. लेखराम की तरह बलिदान भी देना पड़े तो वह भी दें। पं. लेखराम जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में यही किया था। वे अपने सुखों को त्याग कर हमेशा धर्म के मार्ग पर चलते रहे।

6 मार्च पं. लेखराम जी के बलिदान का दिवस है। हम पं. लेखराम जी के जीवन से प्रेरणा लेकर आर्य समाज की उन्नति और तरक्की के लिए शपथ लें। प्रतिवर्ष शहीदी दिवस हमें पं. लेखराम के कार्यों को याद दिलाता है। हमारे शहीदों का बलिदान हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिन उद्देश्यों के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी, उन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पं. लेखराम ने अपना बलिदान दिया था। उन महापुरूषों के बलिदान और कार्यों को व्यर्थ न जाने दें। आर्य समाज एक ऐसे वृक्ष के समान है जिसे अनेक बलिदानियों ने अपने बलिदान से तथा अनेक महापुरूषों ने अपनी प्रेरणाओं से सींचा है। आज हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हम भी कुछ ऐसे कार्य करें कि आने वाली पीढ़ियां हमें भी याद करें। पं. लेखराम के बलिदान दिवस से प्रेरणा लेकर यदि हम आगे बढ़ सकें तो यही उन्हें हमारी सबसे बड़ी श्रद्धाजंलि होगी।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

नवांशहर में पं. हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि), के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव पर 01 मार्च 2019 को आर.के.आर्य कॉलेज नवांशहर में स्व. पं. हरबंसलाल शर्मा जी की स्मृति में प्रथम अन्तर्महाविद्यालय वैदिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतिवर्ष क्रमश: इसी प्रकार इस प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य बच्चों में आर्य समाज, महर्षि दयानन्द व वेदों के प्रति जागृति उत्पन्न करना था। इस प्रतियोगिता में सभी महाविद्यालयों को अलग-अलग विषय दिए गए थे। 1. आर्य के आर्य कॉलेज नवांशहर- ओ३म् परमात्मा का निज नाम, 2. बी.एल.एम. गर्ल्ज कॉजेल नवांशहर- जन-जागृति के नायक-महर्षि दयानन्द सरस्वती, 3. डी.ए.एन. कॉलेज ऑफ एजुकेशन नवांशहर- वेद मनुष्य के सच्चे पथ प्रदर्शन, 4. आर्य कॉलेज लुधियाना-धर्म का वास्तविक स्वरूप 5. डी.एम. कॉलेज मोगा- आर्य समाज का आधुनिक समय में महत्त्व 6. डी. एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन मोगा- माता-पिता एवं शिक्षक-गुरू का महत्त्व 7. लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला-आर्य समाज और हिन्दी का विकास 8. स्वामी गंगागिरी गर्ल्ज कॉलेज रायकोट- आधुनिक समय में नैतिक मूल्यों की उपयोगिता। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा जी मुख्य अतिथि तथा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। वैदिक प्रवक्ता आचार्य राजू वैज्ञानिक जी ने महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सिद्धातों पर प्रकाश ड़ाला। इस बार रनिंग ट्राफी डी.ए.एन. कालेज आफ एजुकेशन फार वूमैन नवांशहर ने जीती।

- विनोद भारद्वाज
कार्यकारी प्रधान

कूड़ा–करकट प्रदूषण

ले.–शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा। (राज.)

शहरी क्षेत्र में कूड़ा कर्कट भी पर्यावरण प्रदूषण का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं शहरी क्षेत्र जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि के कारण मल–मूत्र तथा मानव द्वारा अनुपयुक्त पदार्थ जिसे हम कूड़ा–करकट कहते हैं कि मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है। इन पदार्थों का सूक्ष्म जीवों द्वारा निश्चित मात्रा में अपघटन होता रहता है किन्तु जब कूड़ा–करकट तथा मल अत्यधिक हो जाता है तो फिर इनका अपघटन संभव नहीं हो पाता है। कूटा–करकट के अन्तर्गत कांच, प्लास्टिक के थैले, टिन, डिब्बे, पानी की बोतलें, आदि प्रमुख है। ये सभी पदार्थ वर्तमान में मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति के अंग हो जाते हैं। अब इनके लिए उपयुक्त स्थान की समस्या उत्पन्न हो गई है। एक ही स्थान पर इकट्ठा होने पर यह कूड़ा–करकट कई रोगों को उत्पन्न करता है।

परिभाषा–किसी भी प्रकार का ठोस पदार्थ जो कि लम्बे समय तक आर्थिक दृष्टि से उपयोगी नहीं होने के कारण छोड़ दिया जाता है, साथ ही जैविक अथवा अजैविक स्वरूप के आकार में हो कूड़ा–करकट कहलाता है। फेफ्लिन।

इस परिभाषा के अनुसार कूड़ा–करकट के अन्तर्गत विस्तृत मात्रा में पुराने अथवा नये पदार्थ जो कि उपयोग में लेने के बाद में पुराने अथवा अवशिष्ट पदार्थ सभी कूड़ा–करकट के अन्तर्गत सम्मिलित है।

कूड़ा–करकट का वर्गीकरण तथा स्त्रोत–

(1) घरेलू कूड़ा–करकट–घरेलू कूड़ा–करकट मुख्य रूप से आवासीय क्षेत्रों में उत्पन्न होता है। इसके मुख्य स्त्रोत हैं–रसोई घर तथा घर के आन्तरिक भागों का कूड़ा–करकट।

(ii) घरेलू ऊर्जा स्त्रोत के व्यर्थ पदार्थ, घरेलू कूड़ा–करकट की उत्पत्ति व मात्रा शहर की जनसंख्या के आधार, व्यक्तियों के जीवन–स्तर जनसंख्या का उपयोगी स्वभाव तथा जलवायु की दशाओं पर निर्भर करता है।

(2) वाणिज्यिक कूड़ा–करकट–इसमें निम्नलिखित स्त्रोत हैं–

(i) अस्थाई व्यावसायिक स्थानों व बाजारों से उत्पन्न कूड़ा–करकट

(ii) स्थाई बाजारों, मेलों तथा प्रदर्शनी क्षेत्रों का कूड़ा–करकट

(iii) सड़कों, गलियों में सफाई द्वारा एकत्रित कूड़ा–करकट इसकी मात्रा वाणिज्यिक क्षेत्र पर निर्भर करती है।

(3) औद्योगिक कूड़ा–करकट–औद्योगिक कूड़ा–करकट मुख्यतया औद्योगिक इकाइयों के उत्पादन से ही हो रहा है। इसके स्त्रोत निम्नांकित हैं–

(i) नाभिकीय संयंत्रों से उत्पन्न कचरा

(ii) भारी उद्योगों से उत्पन्न कचरा

(iii) ताप शक्ति गृहों से उत्पन्न कचरा

(iv) रासायनिक उद्योगों से उत्पन्न कचरा

(4) कृषि सम्बन्धी कूड़ा–करकट–कृषि सम्बन्धी कूड़ा–करकट अधिकतर गांवों में होता है।

(5) बागों में पेड़–पौधों से सम्बन्धित कूड़ा–करकट अल्प मात्रा में होता है। इसे या तो जला दिया जाता है या गाड़ दिया जाता है।

कूड़ा करकट का वर्गीकरण–

(1) अधात्विक कूड़ा–करकट–जैसे झूठे भोज्य पदार्थ, रबर, कपड़ा, उद्योगों का अपशिष्ट आदि।

(2) धात्विक कूड़ा–करकट–जैसे लोहे, कांच, डिब्बे, बोतल, चमड़ा आदि।

(3) राख–जलाऊ लकड़ी, लकड़ी का कोयला, पत्थर के कोयले की राख।

(4) भारी कूड़ा–करकट–जैसे टायर, मशीनों के टुकड़े आदि।

(5) सड़कों का हल्का कूड़ा–करकट–पत्तियां, अपशिष्ठ मल आदि।

(6) मृत जीव–कुत्ते, बिल्लियां अन्य मृत जानवर आदि।

(7) तोड़े गए मकानों का कूड़ा–करकट–मिट्टी, पत्थर अन्य धात्विक, अधात्विक ठोस पदार्थ।

(8) कृषि सम्बन्धी कूड़ा–करकट अनाज का अपशिष्ठ भाग।

(9) मल–मूत्र–सुलभ शौचालयों, सार्वजनिक शौचालयों तथा आवासीय घरों का मल–मूत्र

कूड़ा–करकट प्रदूषण का उपयोग–

(1) कूड़ा–करकट को जलाना–ग्रामीण क्षेत्रों में कूड़ा–करकट समाप्त करने का यह परम्परागत तरीका है। नगरों में भी यह तरीका अपनाया जाने लगा है। परन्तु यह वैज्ञानिक समाधान नहीं है। कूड़ा–करकट को जला कर तो ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। कूड़ा–करकट को जलाने से वायु प्रदूषण की समस्या बन सकती है।

(2) खाद तैयार करना–नगरीय कूड़ा–करकट में पर्याप्त भाग में पशुओं का मूल–मूत्र, हड्डी का चूरा, पत्तियां आदि को एकत्रित करके भूमि में दबा कर खाद बनाया जा सकता है।

(3) कूड़ा–करकट द्वारा विद्युत उत्पन्न करना–कूड़ा–करकट का वैज्ञानिक उपयोग विद्युत उत्पन्न करना है। विश्व के विकसित देशों जैसे–अमेरिका, जर्मनी, जापान आदि कूड़ा–करकट से बिजली पैदा कर रहे हैं। विकसित देशों में रहन–सहन का स्तर ऊंचा होने से वहां प्रतिदिन, प्रति व्यक्ति कूड़ा–करकट से बिजली पैदाकर रहे हैं। विकसित देशों में रहन–सहन का स्तर ऊँचा होने से वहां प्रतिदिन, प्रति व्यक्ति कूड़ा–करकट पैदा होने की दर बहुत ऊंची है। इसलिए कूड़ा–करकट के वैज्ञानिक उपयोग के लिए बिजली उत्पादन की तरफ ध्यान दिया गया है। यदि भारत के महानगरों के कूड़ा–करकट से विद्युत उत्पन्न की जाये तो इन नगरों का विद्युत संकट एक सीमा तक समाप्त हो सकता है। यदि कोलकाता, मुम्बई, दिल्ली और चैन्नई शहरों के 50 प्रतिशत कूड़ा–करकट से बिजली उत्पादन करें तो उससे 600 मेगावट बिजली पैदा हो सकती है।

आर्य समाज फाजिल्का में ऋषि बोधोत्सव मनाया

3 मार्च को आर्य समाज फाजिल्का में ऋषि बोधोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस पर्व के उपलक्ष्य में सात कुण्डीय हवन–यज्ञ के आयोजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें सात यजमानों में मुख्य अतिथि श्री वी.के. मित्तल, प्रिंसीपल डी.सी.डी.ए.वी. स्कूल थे। इनके अतिरिक्त श्री महेन्द्र सचदेवा, श्री रमेश सेठी, एडवोकेट श्री ललित मलिक, श्रीमती नीलम आर्य व श्री विजय पुजारा, डा. गौरव एवं डा. मालती चुघ, श्रीमती गौरी एवं अनुराग अग्रवाल एवं श्रीमती पूजा एवं गोपाल वर्मा ने यजमान पदों को सुशोभित किया। यज्ञ श्री प्रेम नारायण विद्यार्थी पुरोहित एवं डा. सुशील वर्मा, संरक्षक आर्य समाज फाजिल्का द्वारा सम्पन्न करवाया गया। तत्पश्चात स्त्री आर्य समाज की संरक्षिता श्रीमती सुदेश नागपाल पूर्व प्रधान श्री सतीश आर्य एवं श्रीमती आशा मिनोचा द्वारा भजनों के माध्यम से महर्षि दयानन्द जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की गई। डा. सुशील वर्मा ने अपने सम्बोधन में ऋषि बोधोत्सव पर एवं स्वामी जी की अमरकृति सत्यार्थ प्रकाश पर प्रकाश डाला और कहा कि आज पाखण्डों का खण्डन हम आर्य समाजियों को पूर्ण रूपेण करना चाहिए और वेद मार्ग को अपनाने की अति आवश्यकता है तभी हम अपनी संस्कृति को बचा पाएगें। आर्य समाज के प्रधान डा. नवदीप जसूजा जी ने सभी का धन्यवाद किया जब कि कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती इन्दु भूसरी जी ने सभी का अभिनन्दन किया। श्री सत्य स्वरूप पुन्छी, मन्त्री यज्ञ के संयोजक थे।

कार्यक्रम के अन्त में सभी यजमानों को स्मृति चिन्ह दिए गए और शान्ति पाठ के बाद ऋषि प्रशाद वितरित किया गया। सभी पदाधिकारी गण में विशेष तौर पर माता कृष्णा कुक्कड़, श्रीमती नवीन मक्कड़, श्रीमती नवजोत, श्री संजीव मक्कड़, Adv; श्री उमेश कुक्कड़ Adv. श्री अभय चावला, श्री वेद प्रकाश शास्त्री, श्री राम चन्द्र चुघ, श्री अरुण झाँव, आर्य मुनि, प्रि. प्रदीप अरोड़ा व अन्य गणमान्य कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

डा. सुशील वर्मा,
संरक्षक आर्य समाज फाजिल्का

पृष्ठ 8 का शेष–महर्षि स्वामी दयानन्द....

वक्तव्य में कहा कि संस्थापक के रूप में स्वामी जी पूजनीय है। वह एक महान देशभक्त, समाज सुधारक, मार्ग दर्शक हुये हैं जिन्होंने अपने कार्यों से समाज को और देश को एक नई दिशा दी है और उन्होंने कहा कि आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य यज्ञ हवन, घर–घर यज्ञ, वेदों, उपनिषदों का पठन–पाठन एवं बच्चों को सत्संग में लाकर भावी पीढ़ी को संस्कारवान बनाना चाहिये। ईश्वर भक्ति, राष्ट्र भक्ति, मातृपितृ भक्ति, सदाचार, समर्पण सेवा इत्यादि का भाव जन जन में जाकर स्वस्थ जीवन जीने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

आर्य समाज नंगलटाऊनशिप के वयोवृद्ध सदस्य श्री आसकरण सरदाना जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की जीवनी पर और उनके द्वारा किये गये अद्भुत कार्यों पर प्रकाश डाला और सुरेश शास्त्री जी का धन्यवाद किया। अन्त में श्री सरदाना जी, श्री ओ.पी. खन्ना, राजी खन्ना, प्रेम सागर एवं सतपाल जौली जी द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नगर के गणमान्य अतिथि श्री के.के.खोसला, कर्ण खन्ना, किरण सेठ, राजीव खन्ना, डा. बनारसी दास, अशोक भाटिया, विमला भाटिया, प्रेम प्रकाश शर्मा, रछपाल राणा, मदन लाल सिकरी, रौनक लाल शान, राजी खन्ना, सुदर्शन चौधरी, पूनम खन्ना, आशा अरोड़ा, नितिन खन्ना, मानव खन्ना, अमृता खन्ना, अभिषेक खन्ना, वीना प्रेम सागर, डा. प्रदीप गुलाटी, के.के.सूद, विनय रावल, जनक रावल, विनिता रावल, हरेन्द्र भारद्वाज, माता कान्ता भारद्वाज एवं कपूर परिवार ने उपस्थित होकर पर्व की शोभा बढ़ाई। तत्पश्चात ऋषि लंगर का वितरण किया गया।

सतीश अरोडा प्रधान

परमात्मा का स्वरूप

ले.-डॉ. सुशील वर्मा, फाजिल्का

कुछ समय पहले हमने यजुर्वेद के 40/8 मन्त्र की चर्चा की थी जिसमें परमात्मा के स्वरूप का वर्णन था। इसी दौरान एक सज्जन का प्रश्न था कि ऋग्वेद के 1/164/20 तथा अथर्ववेद के 9/9/20 के त्रैतवाद को प्रमाणित करता मन्त्र ''द्वा सुपर्णा-अभिचाकशीति'' तो यह दर्शाता है कि परमात्मा तो केवल मात्र मनुष्यों अथवा प्राणियों के कर्मो को देखता ही है वह स्वयं तो कुछ करता नहीं। उत्तर यही था कि परमात्मा न्यायकारी है और न्यायाधीश का कार्य करता है। वहीं प्राणियों के कर्मानुसार उसका फल देता है। तो क्या वह परमपिता परमात्मा कोई अन्य कार्य नहीं करता? प्रश्न का सटीक उत्तर वेद ही प्रस्तुत करता है

विष्णो कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।

इन्द्रस्य युज्यः सखा।। ऋग् 1/22/19

स्पष्ट आदेश है कि विष्णु के कर्मों को देखो। यहाँ परमपिता परमात्मा को विष्णु शब्द से सम्बोधित किया गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के पहले समुल्लास में विष्णु शब्द की व्युत्पत्ति दी गई है। ''विष्लृ व्याप्तौ'' इस दातु से 'नु' प्रत्यय होकर शब्द सिद्ध होता है ''वेवेष्टि व्याप्नोति चराऽचरं जगत स विष्णु'' जो चर अचर जगत में व्यापक है उस का नाम विष्णु है। वह परमात्मा कर्त्ता है। एक व्यक्ति किसी चीज का निर्माण करता है तो वह केवल मात्र उस वस्तु विशेष तक ही सीमित होता है। कुम्हार ने घड़ा तो बना दिया, परन्तु वह मात्र घड़े के निर्माण तक ही सीमित है। घड़ा जिस मिट्टी से बना, उसकी प्रक्रिया तथा उसके पश्चात उसके पकाने में सहायक अन्य क्रियाओं से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। परन्तु परमात्मा तो हर वस्तु के निर्माण की हर क्रिया में कार्यरत है। सृष्टि तो तुच्छ से तुच्छ और अच्छी से अच्छी, गन्दी से गन्दी वस्तुओं से बनी है। ईश्वर को तो प्रत्येक क्रिया में समाविष्ट होना होता है। वेदान्त भी कहता है ''जन्माद्यस्य यतः'' अर्थात् ईश्वर वह जिससे सृष्टि का सर्जन, पोषण व संहार होता है। इसीलिए उसे GOD कहा गया-Generator, Operator, Destructor। उसका अस्तित्व तो एक ही है परमपिता परमात्मा, ईश्वर न कि अलग अलग ब्रह्मा, विष्णु महेश जैसे कि आम जन की धारणा है जो वेद विरूद्ध है। हम यह कभी नहीं कह सकते कि सर्जन का कार्य समाप्त हुआ, उसके बाद पोषण प्रारम्भ होगा, तत्पश्चात संहार। वह तो अनन्त क्रियाओं का एक सदा चलने वाला प्रवाह है। कभी अन्तरिक्ष में जाकर देखें तो पता चलेगा कि सूर्य चन्द्रमा, पृथिवी, अन्य ग्रह, उपग्रह निरन्तर गति में है, कभी ठहरते नहीं। अपनी भाषा में तो हम कह देते है कि दिन हो गया, रात हो गई, सूर्योदय हुआ व सूर्यास्त। इसीलिए अणु अणु और प्रत्येक परमाणु परमाणु में हर समय व्यापक होने से ही हम उस ईश्वर को विष्णु कहते है। विष्णु लोक कोई अलग नहीं जहाँ वह क्षीर सागर में विश्राम कर रहे है। न जाने पौराणिकों ने कैसी कैसी कथाएँ रच दी। उस असीम परमात्मा को सीमित कर दिया। कण कण, पत्ता पत्ता विष्णुलोक है। मच्छर का शरीर भी विष्णु लोक है, हाथी का शरीर भी विष्णु लोक। जैसे अभी कहा कि कुछ लोगों का विचार है कि ईश्वर तो क्रिया शून्य है। वह कर्म के बन्धन में नहीं पड़ता। वह तो द्रष्टा मात्र है, कर्त्ता नहीं। कर्त्ता और भोक्ता तो जीव है वह परमात्मा नहीं। यदि परमात्मा क्रिया शून्य हो, तो फिर तो वह जड़ हुआ। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में अनेक गुणों के साथ में, अन्त में लिखा कि ''ईश्वर सृष्टि कर्त्ता है।''

वास्तव में वह सृष्टा भी है और द्रष्टा भी है। द्रष्टा को मानने वालों ने दुष्टा का पूर्ण अर्थ नहीं समझा। दुष्ट का अर्थ केवल मात्र दर्शन नहीं। दर्शन का अर्थ है ''सम्यक ज्ञान की प्राप्ति''। ''विष्णुः कर्माणि पश्यत्'' उस परमपिता परमात्मा के कर्मों को देखो। देखने का अर्थ है कि आप उसके कर्मों को, उसके कर्तृत्व को देखो अर्थात् सम्यक ज्ञान प्राप्त करो। भास्कराचार्य ने वस्तु को नीचे गिरता देखा तो गुरुत्वाकर्षण का नियम प्रतिपादित किया (जिसे आज हम न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के नाम से जानते है-यह भी हमारा दुर्भाग्य है। इसी प्रकार अन्य वस्तुओं का, नियमों का अवलोकन करें और सम्यक ज्ञान द्वारा उस परमात्मा की सृष्टि को समझें।

अभी इसी देखने के अर्थ को मन्त्र के अगले भाग में समझाया है-''यतः व्रतानि पस्पशे''-'यतः'-जिनकी सहायता से, अर्थात उस ईश्वर के कर्मों के सम्यक ज्ञान से 'व्रतानि पस्पशे' मनुष्य अपने व्रतों का अनुष्ठान करे। यहाँ व्रत का अर्थ है 'कर्त्तव्य पालन' न कि उपवास।

कर्त्तव्य की पूर्ति तो विष्णु, उस परमपिता परमात्मा के सम्यक ज्ञान की प्राप्ति से ही हो सकती है। मनुष्य को अपने व्रतों का निश्चय करना ही उसका विवेक है-सम्यक ज्ञान की प्राप्ति है अर्थात् विष्णु के कर्मों को देखकर उनसे शिक्षा लेना। हमें उस का अनुकरण करना है, अनुकरण ही विज्ञान का आधारभूत है। प्रश्न फिर उठता है कि हम उस के कर्मों को देखकर अनुसरण क्यों करें? उत्तर इसी मन्त्र का अन्तिम पद-''इन्द्रस्य युज्यः सखा। वह परमात्मा तो इन्द्र का सबसे अच्छा व योग्य सखा है, मित्र है। अब यह इन्द्र कौन है? महर्षि दयानन्द ने इन्द्र को केवल राजा ही नहीं अपितु मित्र, सेनापति आदि अनेक अर्थ बताएँ हैं।

यहाँ इन्द्र का अर्थ है जीवात्मा अर्थात् परमात्मा जीव का सबसे योग्य मित्र है। वह उसका परम हितैषी है। हमारे प्रत्येक अंग को बनाने वाला, चलाने वाला तो वही है। उदाहरण के लिए आँख हमारे देखने के लिए बनाई, आँख की सहायता के लिए सूर्य भी बनाया। आँख क्या, कोई भी अंग उसकी सहायता के बिना निरर्थक है। आँख वहाँ तक नहीं पहुँच सकती, न वाणी, न मन। इसीलिए केनोपनिषद् (1-3) कहता है ''न तत्र चक्षुर्गच्छति, न वाग्गच्छति, नो मनो न विद्मा न विजानीमो'' क्यों कि वह सब कुछ तो जीव की आत्मा से ही जाना जाएगा। ''श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद्वाचो ह वाचे स उ प्राणस्य प्राणः।'' जो कान का कान, मन का मन, वाणी का वाणी प्राण का प्राण और आँख की आँख वह आत्मा से ही जाना जाएगा।'' प्रेत्यास्माल्लोप्रदभूता भवन्ति।''

इस प्रकार प्रत्येक वस्तु से उस परमात्मा की जीवात्मा अथवा जीव से प्रमाण मिलता है केवल मित्रता का वह भी कोई साधारण मित्र नहीं अपितु सबसे योग्य मित्र।

थोड़ा और आगे बढ़े तो इसका विस्तृत वर्णन अर्थात् उस परमात्मा का अद्भुत अहसास, अविस्मरणीय, रोमांचित करने वाला वर्णन अथर्ववेद के 10/8/32 मन्त्र में

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।

देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।।

अर्थात् उस परमात्मा के काव्य को देखो। वह इतना निकट है कि कोई उसे छोड़ नहीं सकता, वह इतना निकट है कि कोई उसे देख नहीं सकता। फिर भी उस ईश्वर का वह काव्य न कभी मरता है न जीर्ण होता है।

वह परमात्मा हर वस्तु में विद्यमान है, उसी प्रकार वह हमारे हृदयों के भीतर भी समाया हुआ है। जिस प्रकार वह ब्रह्माण्ड को चलाता है उसी प्रकार हमारे पिण्ड को भी वही चलाता है और इसी व्यवस्था को यहाँ 'काव्य' के नाम से सम्बोधित किया गया है। पिछले मन्त्र (यजुर्वेद 40/8) में उसे कवि व मनीषी कहा गया था। कभी आपने रात्रि में सितारों, ग्रहों उपग्रहों को निहारा होगा, महसूस किया होगा (आजकल तो मात्र सुना ही होगा क्योंकि आज बाहर छत पर सोता ही कौन है?) ये सब क्या है? एक प्रकार की राग-रागिणियाँ है जो चारों ओर से गुंजरित हो रही है। यदि आप उसे महसूस करो तो सारा शरीर तरंगित हो जाता है आत्मा झूम उठती है उस प्रभु के काव्य को देखकर फूलों पर गुँजाहट करते वो भंवरे, झरनों से झरता निर्मल जल, सूर्य की किरणों, विशेष तौर पर प्रभात के रश्मियाँ, पक्षियों की चहचाहट, फूलों पर पड़ती सूर्य किरणें जो प्रेरणा देती है। खिलने की 'सविता' का

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शोक संवेदना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य एवं आर्य समाज कोटकपूरा के मन्त्री श्री ललित बजाज जी की पूज्या माता श्रीमती कौशल्या देवी जी का देहान्त हो गया। श्रीमती कौशल्या देवी जी का जीवन सात्विक विचारों से ओत-प्रोत था। यज्ञ के प्रति व धर्म के कार्यों के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी। माता निर्माता भवति अर्थात् माँ अपनी सन्तान का निर्माण करने वाली होती है। शास्त्र के इस वाक्य के अनुसार उन्होंने अपनी सन्तान का निर्माण किया। उनके पदचिह्नों पर चलते हुए उनके सुपुत्र श्री ललित बजाज आर्य समाज की सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं। पूज्या माता कौशल्या देवी जी के निधन से परिवार के साथ-साथ समाज की भी अपूरणीय क्षति है। परमपिता परमात्मा ऐसी पवित्र आत्मा को अपने चरणों में स्थान देकर शान्ति व सद्गति प्रदान करें व परिवार को इस असहनीय दु:ख को सहन करने की धैर्य शक्ति प्रदान करे।

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से तथा पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की ओर से पूज्य माता श्रीमती कौशल्या देवी जी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। दु:ख की इस घड़ी में हम सभी शोक संतप्त परिवार के साथ हैं। **-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री**

ऋषि बोधोत्सव मनाया

आर्य समाज मन्दिर फिरोजपुर छावनी में ऋषि दयानन्द जन्म दिवस, ऋषि बोधोत्सव का पर्व बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। सर्वप्रथम महायज्ञ का आयोजन हुआ जिसके मुख्य यजमान श्री अजय चावला, ऐडवोकेट तथा उनका सुपुत्र श्री अभिषेक चावला बनें और विश्व शान्ति की विशेष आहूतियाँ डाली गई।

आचार्य नारायण सिंह, महापदेशक, राजस्थान से पधारे उनका प्रवचन हुआ और ऋषि दयानन्द की जीवनी पर प्रकाश डाला और कहा उनके जीवन का प्रत्येक पल मानवमात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र की भलाई में लगा। नारी शिक्षा पर उन्होंने विशेष बल दिया और अंधविश्वासों से दूर रहने का उपदेश दिया।

अन्त में प्रधान श्री विजय आनन्द जी ने अपने भजनोपदेश से सभी को मन्त्रमुगध कर दिया और कहा हम ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के उपदेशों पर चल कर ही अपने मानव जीवन को सफल कर सकते हैं।

अन्त में ऋषि-लंगर का आयोजन भी रखा।

(मनोज आर्य) महामन्त्री

आर्य समाज बरनाला में ऋषि बोध उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बरनाला द्वारा ऋषि दयानन्द बोध उत्सव दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर बरनाला में आयोजित किया गया प्रोगाम के मुख्य अतिथि डा. सूर्यकान्त शोरी प्रधान आर्य समाज बरनाला तथा विशेष अतिथि भारत भूषण मैनन मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थे। प्रोग्राम का आरम्भ यज्ञ हवन द्वारा पुरोहित श्री राम जी ने वैदिक मन्त्रों द्वारा करवाया। प्रोग्राम में श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज, दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, आर्य माडल स्कूल, गांधी आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, लाल बहादुर शास्त्री सीनियर सैकण्डरी स्कूल, गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला के विद्यार्थी, अध्यापक, प्रबन्धक समिति सदस्यों ने भाग लिया। प्रोग्राम में उनके द्वारा भजन, प्रवचन प्रस्तुत किए गए। प्रोग्राम को डा. सूर्यकान्त शोरी, भारत भूषण मैनन, सतीश सिंधवानी, रामकुमार सोबती, रंजना मैनन, अनीता मित्तल, राम चन्द्र आर्य, श्री राम शास्त्री ने भी संबोधित किया। सम्बोधित करते हुए प्रवक्ताओं ने ऋषि दयानन्द जी के जीवन, कृत्यों, आर्य समाज के नियमों वेदों पर प्रवचन, झूठे आडम्बरों का विरोध, सती प्रथा बाल विवाह तथा अन्य बुराइयों के विरूद्ध उनके कार्य, शुद्धिकरण अभियान, स्त्री शिक्षा तथा सत्य पर अपना जीवन न्यौछावर करने सम्बन्धी चर्चाएं की। पुलवामा के शहीद सैनिकों को याद करते हुए सभा द्वारा मौन रखा गया। प्रोग्राम में भारत मोदी, रामशरण दास गोयल, सूरजभान, वन्दना गोयल, रजनी बाला, अनीता सिंगल, कृष्ण कुमार, राजमहिन्द्र, सुमन जिन्दल, सुमन अग्रवाल तथा अन्य महानुभाव उपस्थित थे। मंच संचालन तिलक राम मंत्री आर्य समाज बरनाला द्वारा किया गया। प्रोग्राम प्रस्तुति छात्राओं को परितोषिक बांटे गए। शांति पाठ उपरान्त प्रसाद वितरण किया गया। **-तिलक राम मंत्री आर्य समाज बरनाला**

आर्य समाज धूरी में ऋषिबोध उत्सव मनाया गया

आर्य सीनीयर सैकण्डरी स्कूल धूरी के प्रांगण में आज दिनांक 28-2-2019 को ऋषिबोध उत्सव महाशय प्रतिज्ञापाल जी एवं श्री आर.पी. शर्मा प्रिंसीपल जी के नेतृत्व में यह पर्व बड़ी श्रद्धा एवं धूमधाम से मनाया गया। इसमें चारों संस्थाओ के छात्रों व स्टाफ ने भाग लिया। छात्राओं द्वारा धार्मिक भजन गाये गये। इसमें पुलवामा के वीर शहीदों को श्रद्धाजली दी गई। इसमें श्री अशोक जिंदल जी प्रधान, वीरेन्द्र जी, वासदेव जी, डा. रामलाल जी, सतीश पाल जी, प्रहलाद जी, विकास शर्मा एडवोकेट, सुशील पाठक, विकास जिंदल, सोम प्रकाश डा. सरीन जी, पवन जी आदि सदस्य इस बोध-उत्सव में शामिल हुये। छात्रों को लड्डू (मोदक) दिये गये।

शोक संवेदना

रविवार को हवन के पश्चात् एक शोक सभा का आयोजन आर्य समाज मन्दिर फरीदकोट में किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री ललित बजाज जी की माता श्रीमती कौशल्या देवी जी निधन पर सभी ने गहरा शोक प्रकट किया। माता जी एक धार्मिक विचारों एवं सदगुणों से सम्पन्न श्रेष्ठ नेक दिल महिला थी जिन्होंने अपनी सन्तानों को धार्मिकता का पाठ पढ़ाया। इन्हीं श्रेष्ठ विचारों के कारण उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री ललित बजाज जी अनेकों वर्षों से आर्य समाज कोटकपूरा के मन्त्री पद को सुशोभित किये हुए हैं। उनके सभी सुपुत्र श्रेष्ठ मार्ग पर अग्रसर हैं। उनके जाने से सभी को गहरा आघात लगा, परमात्मा उन्हें अपने चरणों में निवास दे। हम सब प्रार्थना करते है कि परिवार इस दु:ख को सहन कर सके प्रभु उन्हें शक्ति प्रदान करें। हम सब आर्यजन माता जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

-सतीश कुमार आर्य मन्त्री

ऋषिबोध उत्सव हर्षोल्लास से मनाया

ऋषि बोध उत्सव के अवसर पर बठिडा आर्य समाज द्वारा प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें लगभग 60-70 लोग उपस्थित हुए। प्रधान श्री अश्वनी मोंगा जी की अध्यक्षता में बठिंडा में पहली बार आर्य समाज द्वारा प्रभात फेरी निकाली गई। पंडित शशिकांत शास्त्री जी द्वारा लगाए गए आर्य समाज अमर रहे वेद की ज्योति जलती रहे के नारों से आसमान गुंजायमान हो उठा। मौसम खराब होने के बावजूद भी सभी सदस्यों में बहुत ही उत्साह देखने को मिला। आर्य समाज के महामंत्री सुरेंद्र गर्ग ने बताया कि अगले साल प्रभातफेरी 2 दिन निकाली जाएगी सभी लोग आर्य समाज के झंडे उठाए हुए थे एवं गायत्री मंत्र का जाप एवं महर्षि दयानंद अमर रहे के नारे लगा रहे थे। इसके पश्चात आर्य समाज चौक बठिण्डा के प्रांगण में ऋषि बोधउत्सव पर्व (शिवरात्रि) बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सर्व प्रथम पंडित शशिकान्त शास्त्री जी ने पावन वेद मन्त्रों के साथ हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। अन्त में सभी में ऋषि लंगर वितरित किया गया।

-सुरेन्द्र गर्ग

तलवाडा में ऋषिबोध उत्सव हर्षोल्लास से मनाया

आर्य समाज तलवाड़ा के ऋषिबोध उत्सव 4-3-2019 के उपलक्ष्य में कार्यक्रम किया गया प्रात: आठ बजे वृहद् हवन यज्ञ किया गया जिस में समाज के सभी अधिकारी पहुँचे सभी ने बड़ी श्रद्धा से हवन यज्ञ किया। हवन के पश्चात् कृष्णा देवी ने महर्षि देव दयानन्द जी के जीवन पर भजन गाये। भजनों के पश्चात पण्डित परमानन्द जी ने महर्षि देव दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार अकेले स्वामी जी ने वैदिक धर्म को संसार में फैलाया कितने कष्ट सहन किये लोगों ने जहर दिया पत्थर मारे गालियां निकाली उन पर फिर भी स्वामी जी ने परोपकार किया। आर्य समाज की स्थापना करके उन्होंने वैदिक धर्म का कार्य आगे भी चलता रहे यह कार्य आर्य समाज को सौंप कर मानवता का भला किया उनके किये हुए परोपकार के कार्य के ऋण हम जीवन भर भी नहीं उतार सकते वह अकेले थे सारा संसार एक तरफ था सारे संसार को उन्होंने मोड़ कर रख दिया।

-परमानन्द आर्य

फगवाड़ा में ऋषि बोध उत्सव मनाया

आर्य समाज गौशाला रोड़ फगवाडा द्वारा शिवरात्रि के महोत्सव को ऋषि बोधोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ भी किया गया। आर्य माडल सी सै स्कूल फगवाडा के प्रांगण में हुए इस आयोजन में मुक्य वक्ता डा. कैलाश नाथ भारद्वाज ने कहा कि इस शिवरात्रि की रात को ही मूलशंकर उर्फ महर्षि दयानंद सरस्वती के मन में बोध जगा था व सत्य को जानने की प्यास जगी थी। और वह सच्चे शिव की तलाश में घर छोड़कर जंगल जंगल पर्वत पर्वत भटकने लगे। अंत में उनकी तलाश वेदों की खोज से समाप्त हुई, ध्यान व समाधि में उन्हें सच्चे शिव के दर्शन हुए। तत्पश्चात उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की तथा सर्व साधारण के लिए सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित करके समाज में व्याप्त ऊंचनीच, जात पात, छुआछात जैसी बुराइयों को दूर करने के लिए काम किया। बाल विवाह का विरोध किया। विधवा विवाह का समर्थन किया। तथा नारी को शिक्षित करने के लिए कन्याओं के लिए स्कूल कालेज खोलने की दिशा में सार्थक कदम उठाए। आर्य समाज के महासचिव डा यश चोपड़ा ने सभी की तरफ से धन्यवाद किया। इस मौके पर बलराज खोसला, सुशील कोहली, रमेश वर्मा, रोहित प्रभाकर, आशु पुरी, संजीव सभ्रवाल, सरला चोपड़ा, सुरिन्द्र चोपड़ा, वरुण चोपड़ा आदि सहित आर्य माडल स्कूल के स्टाफ सदस्य भी उपस्थित थे।

-डा. यश चोपड़ा, महासचिव, आर्य समाज, गौशाला रोड़, फगवाडा

पृष्ठ 2 का शेष-तत्जपस्तदर्थभावनम्

जप की स्थिति बन जाऐंगी जिसे अजपा-जाप भी कहा जाता है।

इस प्रकार यदि ठीक ढंग से जप किया जाए तो उपासक को इसका क्या फल मिलेगा, इस सम्बन्ध में महर्षि पतंजलि जी लिखते हैं-तत: प्रत्यक्चेतनाधि-गमो-ऽप्यन्तराया-भावश्च।। (यो०2-29) महर्षि दयानन्द जी इस सूत्र की विवेचना में कहते हैं-'फिर उससे उपासकों को यह भी फल होता है... (तत: प्र०) अर्थात् उस अन्तर्यामी परमात्मा की प्राप्ति और (अन्तराय) उसके अविद्यादि क्लेशों तथा रोग रूप विघ्नों का नाश हो जाता है।' (ऋ०भू०उपासना)। ठीक प्रकार अर्थ-विचार करते हुए जब करने वाले उपासक को यहां पर मुख्यरूप से दो लाभ बताए गए हैं-अन्तर्यामी परमात्मा की प्राप्ति और अविद्यादि क्लेशों व विघ्नों का नाश। इस प्रकार उपासक जप के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। यदि अर्थ-विचार नहीं किया गया तो जप की प्रक्रिया सार्थक नहीं हो सकेगी क्योंकि किसी भी शब्द या मन्त्र को भावना-विशेष के द्वारा ही सार्थकता प्रदान की जा सकती है तथा उसी से वह मन्त्र अर्थात् मन का कार्य करने वाला यन्त्र बन जाता है। किसी एक शब्द वा मन्त्र को बार-बार दोहराना एवं उसे मानसिक संकल्प के साथ जोड़ना ही अर्थ-विचार है। इस सम्बन्ध में ब्र० जगन्नाथ पथिक जी लिखते हैं-'अर्थ भावना से एक विशेष प्रकार के कम्पन अथवा लहरें उत्पन्न हो-होकर संचित होती जाती है जो फिर विशेष वेग से निरन्तर उठ-उठकर बुद्धितत्व के द्वारा, मनस्तत्व से एक निश्चित परिणाम उत्पन्न करा देती है-वही अर्थसिद्धि मन्त्र का फल होता है। संसार के प्रत्येक पदार्थ में बसी उसी पदार्थ की आकृति-रूप वा निगूढ़-सम्मोहन-शक्ति हमारी प्रत्येक इन्द्रिय पर एक विशेष प्रकार का आघात करती है-धक्का देती है, यह आघात स्नायुमण्डल के द्वारा, विद्युत्-लहरियों के रूप में, 'प्राणमय-कोश' में प्रविष्ट होकर हमारे अन्दर एक परिणाम-विशेष उत्पन्न करता है-यही विज्ञान का स्वरूप है। इस आन्तरिक परिवर्तन को हम अपनी दिव्य-दृष्टि के द्वारा देख कर 'विज्ञान' की संज्ञा प्रदान करते हैं और स्पर्श के द्वारा अनुभूत हुए परिवर्तन को हम 'ज्ञान' कहते हैं। जब कोई प्रवाह हमारे मस्तिष्क में घुसता है तो उसका उत्तर 'अन्तस्' से मिलता है, और उस प्रवाह की लहरियां मस्तिष्क से चलकर स्नायु मण्डल के द्वारा नाभिगत 'मणिपुर-चक्र' को प्रभावित करती हैं, तब वहां पर शब्द का 'परा' रूप गतिमान होता है... मन्त्र जब से मन्त्र-शक्ति की क्रमबद्ध लहरियां उठकर जो विशेष परिणाम उत्पन्न करती हैं-वही तो मन्त्र का फल होता है। 'मन्त्र-शक्ति', 'मन-संकल्प' तथा हृदय की 'भावना' लगभग ये पर्यायवाची शब्द हैं...जब का तात्पर्य यह है कि 'प्राण' को निम्नस्तर से उठाकर उच्चस्तर में ले जाए। एवं मन को प्राण के क्रियामय क्षेत्र से उठाकर 'विज्ञानमय-कोश' के तथा मन-बुद्धि 'आनन्दमय-कोश' के स्तर में लाकर स्थिर कर दिया जाए...'

यदि जप की प्रक्रिया विधिवत् पूर्ण श्रद्धा, समर्पण एवं अर्थ-विचार सहित हो तो धारणा, ध्यान और समाधि इन तीनों का एक ही काल में मेल होकर उपासक का संयम में प्रवेश होता है। योगदर्शन का सूत्र है-त्रयमेकत्र संयम:।। (3-4) महर्षि दयानन्द जी इसकी विवेचना इस प्रकार करते हैं-'(त्रयमेकत्र०) जिस देश में धारणा की जाए, उसी में ध्यान और उसी में समाधि अर्थात् ध्यान करने योग्य परमेश्वर में मग्न हो जाने को संयम कहते हैं, जो एक ही काल में तीनों का मेल होना है अर्थात् धारणा से संयुक्त ध्यान और ध्यान से संयुक्त समाधि होती है। उनमें बहुत सूक्ष्म काल का भेद रहता है, परन्तु जब समाधि होती है तब आनन्द के बीच में तीनों का फल एक ही हो जाता है।' (ऋ०भू०उपासना)

आर्य समाज फरीदकोट (पंजाब) में ऋषि दयानन्द जन्म दिन एवं ऋषि बोधोत्सवपर्व मनाया

आर्य समाज मन्दिर मेनबाजार की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 195 वें जन्मोत्सव और शिव रात्रि के पावन पर्व के उपलक्ष्य में ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रात: 9.00 बजे यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें यज्ञ ब्रह्मा की भूमिका पंडित कमलेश शास्त्री, पुरोहित आर्य समाज ने निभाई। तत्पश्चात् मुख्यातिथि प्रिंसीपल श्री ओ.पी. छाबड़ा ने तथा इस समारोह के मुख्य वक्ता डा. निर्मल कौशिक ने संयुक्त रूप से 'ओ३म्' ध्वज (झंडा) फहराने की रस्म निभाई। इसके बाद आर्य समाज के मेन हाल में इस समारोह के मुख्य वक्ता हिन्दी व संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य शिरोमणि (मानद उपाधि) से अलंकृत डा. निर्मल कौशिक ने स्वामी दयानन्द जी की समाज को देन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान को बताया। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की स्थापना के पश्चात् वैदिक संस्कृति, वैदिक शिक्षण परम्परा यज्ञ परम्परा और वैदिक संध्या का प्रचलन प्रारम्भ हुआ। इसी से भारतीय शिक्षा पद्धति और गुरुकुल परम्परा के माध्यम से संस्कृत भाषा और संस्कारों का संरक्षण सम्भव हुआ है। इसके पश्चात् बृजेन्द्र कालेज की छात्रा सुश्री सुमेधा ने अपने मधुर ध्वनि से भजन प्रस्तुत कर सब का मन मोह किया। तलवाड़ा से पधारे 'आर्य प्रतिनिधि' सभा पंजाब की ओर से पं. अरुण विद्यालंकार भजनोपदेशक ने अपने आकर्षक भजनों द्वारा सभी को मन्त्रमुग्ध किया। समारोह के अन्त में आर्य समाज के मन्त्री श्री सतीश शर्मा ने सभी मेहमानों का धन्यवाद किया। अन्त में ऋषि लंगर की व्यवस्था भी की गई। अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केन्द्र की छात्राओं द्वारा संस्कृत शिक्षक के नेतृत्व में छात्राओं ने समूह गान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रो. एन के गुप्ता, रवि वर्मा, प्रमोद कुमार गोयल, मनीश कुमार, हरि अरोड़ा मुकेश पुरी, इन्दु, मदन मोहन देवगन, जगदीश वर्मा, स्त्री आर्य समाज के सभी सदस्य, बलदेव वाटस, महेश प्रसाद उपस्थित थे।

पृष्ठ 5 का परमात्मा का स्वरूप

वास्तविक स्वरूप। अपने आप में महसूस कीजिए उस परमपिता परमात्मा का वह सविता रूप, आनन्दित होने के लिए, उत्साहित होने के लिए-उस परम पिता परमात्मा का दिव्य काव्य। ईश्वर की व्यवस्था को अनुभव करना ही सुख का मूल है। वह काव्य, वह व्यवस्था, वह विष्णु के कर्म जो न कभी मरता है न जीर्ण होता है। क्योंकि हमारी इन्द्रियों का मुख बाहर की ओर है और वे अपने भीतर निहित शक्ति को नहीं जान पाती। इसलिए धीर पुरुष ही उस व्याप्त आत्मा को देख पाते है और अमरत्व को प्राप्त होते है। साधारण पुरुष भी थोड़ा उस परमात्मा से जुड़ने का प्रयास करे तो वह भी उस के दिव्य काव्य का अहसास कर सकता है। इसलिए हम केवल मात्र उस परमात्मा की जिस का वर्णन दिया गया है उसी के स्वरूप को समझे, देखें, मानें और जानें और उसी की उपासना करें।

''निहाँ है जर्रे जर्रे में, अयाँ है जर्रे जर्रे से।

मुनव्वर पर्दा है, पर्दानशीं के रूये रोशन से।।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज भार्गव नगर...

कुमार ने किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम के पश्चात उपस्थित सभी आर्यजनों ने ऋषि लंगर ग्रहण किया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पं. मनोहर लाल, श्री राज कुमार प्रधान, श्री बिशम्बर कुमार मन्त्री, श्री रमेश लाल आर्य, श्री राकेश कुमार, मोनू, राकेश पीलू, श्री लाभ चन्द, श्री कमल किशोर, माता सत्या देवी, बहन कान्ता देवी, श्रीमती प्रवेश, श्रीमती सुनीता, श्रीमती शीला देवी, श्री जगदीश आर्य, पं. सोमनाथ का विशेष योगदान रहा। आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर, आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दा, आर्य समाज बस्ती बावा खेल, आर्य समाज गांधी नगर-1, आर्य समाज गांधी नगर-2 तथा आर्य समाज गढ़ा के सभी कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विशेष सहयोग दिया।

सुदेश कुमार वरिष्ठ उपप्रधान
आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर

आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर में महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस एवं बोधोत्सव का पर्व 25 फरवरी से 3 मार्च तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ में आहुतियां प्रदान करते हुये आर्य समाज भार्गव नगर जालन्धर के संरक्षक श्री सरदारी लाल जी आर्य एवं अन्य। जबकि चित्र दो में विधायक सुशील रिंकू के पधारने पर उनका स्वागत करते हुये आर्य समाज के पदाधिकारी वरिष्ठ उप प्रधान श्री सुदेश कुमार, प्रधान श्री राज कुमार, कोषाध्यक्ष श्री मनोहर लाल जी आर्य, संरक्षक श्री सरदारी लाल जी आर्य, श्री निर्मल कुमार एवं अन्य।

आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस एवं बोधोत्सव का पर्व दिनांक 25 फरवरी से 3 मार्च तक बड़े धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 24, 25 फरवरी को प्रभात फेरियां निकाल कर लोगों को जागरूक किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन तथा भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य हरियाणा के मधुर भजन हुए। रोज रात को आर्य समाज की ओर से लंगर का प्रबन्ध किया गया। दिनांक 3 मार्च 2019 रविवार को मुख्य कार्यक्रम का प्रारम्भ विश्व शान्ति यज्ञ के द्वारा हुआ जिसे पं. मनोहर लाल जी आर्य तथा पं. विजय कुमार शास्त्री जी ने सम्पन्न करवाया। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री बी.एल. बजाज परिवार सहित, श्री रमेश लाल आर्य परिवार सहित, माता सत्या देवी परिवार सहित, श्री कमल किशोर परिवार सहित, मुख्य रूप से यजमान बनें। सभी यजमानों को सामूहिक आशीर्वाद विद्वानों के द्वारा दिया गया। यज्ञ के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान बाबू श्री सरदारी लाल आर्यरत्न जी की अध्यक्षता में आर्य सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम स्त्री सभा वेद मन्दिर भार्गव नगर की माता सत्या व बहन कान्ता के भजन हुए। उसके पश्चात श्री सुरेन्द्र आर्य बस्ती बावा खेल के मधुर भजन हुए तथा पूरे एक सप्ताह के लिए हरियाणा से पधारे श्री संदीप आर्य भजन मण्डली ने अपने भजनों के द्वारा ऋषि महिमा का गुणगान किया। भजनों के पश्चात महोपदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री, पं. मनोहर लाल आर्य ने अपने-अपने विचारों के द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज के कार्यों का वर्णन किया और उपस्थित आर्य जनता को महर्षि दयानन्द की तरह बोध प्राप्त करने की प्रेरणा दी। विशेष रूप से पहुँचे विधायक श्री सुशील रिंकु, श्री मोहिन्द्र भगत ने भी महर्षि दयानन्द जी के जन्मदिवस की शुभकामनाएं प्रदान की। अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न ने संगठन को मजबूत करने तथा वेदों के प्रचार-प्रसार का आह्वान किया। सभी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा बताए गए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी और कहा कि ऋषि दयानन्द के द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर ही भारत को विश्वगुरू बनाया जा सकता है। मंच का संचालन आर्य समाज के मन्त्री श्री बिशम्बर (शेष पृष्ठ 7 पर)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस व बोधोत्सव मनाया

आर्य समाज नंगल में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस व बोधोत्सव पर हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन जबकि मंच पर विराजमान श्री सुरेश शास्त्री जी एवं अन्य। चित्र दो में उपस्थित जनसमूह।

आर्य समाज नंगलटाउनशिप के तत्वावधान में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जन्म दिवस व बोधोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रात: 10.00 बजे हवन यज्ञ में डा. ईश्वर चन्द्र सरदाना, श्रीमती अर्चना सरदाना और श्री गुमान चंद तलूजा एवं श्री दीपक शर्मा सपत्नीक श्रीमती अनु शर्मा मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित हुये। पुरोहित कृष्णकांत जी ने बड़ी ही श्रद्धा भाव से मंत्रोच्चारण करके हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया और साथ ही यज्ञ की महिमा बारे भी बताया। श्रीमती नरेश सहगल एवं श्रीमती हनी सेठ जी ने ऋषि की महिमा में अपने द्वारा रचित भजन सुना कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर से पधारे श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा, उनके उद्देश्यों और आर्य समाज के लक्ष्य को आज के परिवेश के संदर्भ में अपने सरल शब्दों में इसकी सार्थकता को प्रमाणित किया। उन्होंने स्वामी जी द्वारा किये गये कार्यों जैसे कि अंधविश्वास, पाखंड, बुराई का विरोध, बाल विवाह, सति प्रथा का विरोध और विधवा विवाह का समर्थन किया एवं वेदों की ओर लौटने का नारा दिया। धर्म व संस्कृति की रक्षा, दलितों और अनार्थों के उद्धार, धर्म मार्ग पर चलने की शिक्षा और गुरुकुलों की व्यवस्था का कार्य, वेदों का सरलीकरण, स्त्री शिक्षा प्रसार आदि पर विस्तार से बताया। आर्य समाज के प्रधान श्री सतीश अरोड़ा जी ने अपने (शेष पृष्ठ 4 पर)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।